Paper IV
Part II Hall

राज्य की उत्पत्ति के सिद्धान्त (1)

Q. Discuss The Various Theories about Origin of state ?

Ans. →

प्राचीन भारतीय साहित्य में राजा की उत्पत्ति के बारे में विभिन्न प्रकार के विचार प्रकट हुए हैं। ये विचार हिन्दू जाति के विशाल साहित्य में बिखरे पड़े हैं। इसके आधार पर राज्य की उत्पत्ति के बारे में निश्चित सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया जा सकता है। राज्य की उत्पत्ति के बारे में कौटिल्य के समय के पूर्व लिखा गया ऐसा कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र अपने पूर्ववर्ती आचार्यों के ग्रंथों का उल्लेख करते हुए अपना मत प्रकट करता है। इस मत को स्वीकार करते हुए कौटिल्य ने उल्लेख किया है — "पृथ्वी की प्राप्ति और उसकी रक्षा के लिए पुरातन आचार्यों ने जितने भी अर्थशास्त्र विषयक ग्रंथों का निर्माण किया, उन सबका सार संकलन कर प्रस्तुत अर्थशास्त्र की रचना की गयी है।"

प्राचीन भारतीय साहित्य में राज्य की उत्पत्ति के बारे में अनेक प्रकार के मत मिलते हैं। डा० जायसवाल के अनुसार – ऋग्वेद में राजा के चुनाव का संकेत मिलता है। डा० पांडुरंग काणे के अनुसार – अथर्ववेद में राजा का निर्वाचन की ओर संकेत मिलता है। अन्य वैदिक ग्रंथों में राजा-निर्माता को रत्निन कहा गया है। महाभारत तथा दीर्घनिकाय में राज्य की उत्पत्ति के पूर्व की सामाजिक व्यवस्था को अत्यन्त शांतिपूर्ण एवं सुखमय बताया गया है। सतयुग इसी प्रकार की शांति और सुख का प्रतीक है। इसके विपरीत ब्राह्मण साहित्य में सुर और असुर के बीच निरन्तर संघर्ष का उल्लेख किया गया है। अतः इस संघर्ष के फलस्वरूप राजा की उत्पत्ति हुई। इसी प्रकार अनेक ग्रंथों में स्वीकार किया गया है कि राजा की उत्पत्ति ईश्वर द्वारा हुई। राजा में ईश्वर का अंश होता है। अतः अनेक पौराणिक ग्रंथों में राजा को ईश्वर

का ही अवतार माना गया है। इस प्रकार के विभिन्न विचार विभिन्न सिद्धांतों की ओर निर्देश करते हैं जो निम्न हैं।

(1) दैवीय उत्पत्ति का सिद्धांत Divine Origin Theory

हिन्दू राज्य शास्त्र के अनेक ग्रंथों में राजा की उत्पत्ति को दैवीय (Divine) बतलाया गया है। इस सिद्धांत के अनुसार राज्य अथवा राजा को ईश्वर ने जन्म दिया। राजा को राज्य करने की शक्ति ईश्वर द्वारा प्राप्त है। धर्मग्रंथों के अनेक स्थलों पर राजा को ईश्वर भी बतलाया गया है और यह कहा गया है कि ~~ईश्वर~~ राजा के अनेक रूप हैं। राजा के न होने से समाज में अव्यवस्था रहती है। मनु के अनुसार "अपनी शक्तियों द्वारा वह राजा अग्नि तथा वायु है, सूर्य तथा चन्द्र है, वह धर्म कुबेर, वरुण तथा महान इन्द्र है। अग्नि केवल एक व्यक्ति को जलाती है, जो लापरवाही से उसके निकट रहता है; परन्तु राजा की अग्नि (क्रोध) पशु तथा सम्पत्ति के संसार के साथ (समस्त) परिवार का भरण करती है।"

इसी प्रकार के सिद्धांत का उल्लेख मत्स्य पुराण में भी किया गया है। महाभारत यद्यपि राज्य की उत्पत्ति के बारे में सामाजिक आनुबन्ध के सिद्धांत को प्रस्तुत करता है। फिर भी महाभारत में अनेक ऐसे स्थल हैं जिनसे यह स्पष्ट होता है कि उस काल में शासन व्यवस्था को ईश्वर निर्मित समझा जाता था। राजपद को दैवी माना जाता था। महाभारत के "शांति पर्व" में राजा के कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए यह बतलाया गया है कि "राजा इन्द्र है, राजा यम है, राजा धर्म है, राजा के विविध रूप हैं। राजा इस पृथ्वी को धारण करता है। इस पृथ्वी का पालन करता है।

Scanned with CamScanner

इस सवाल पर श्री गडांकर के अनुसार राजा को केवल ईश्वर से पुत्रका ही प्राप्त नहीं की गयी है जा सकती है, बल्कि राजा को साक्षात् ईश्वर ही माना गया है। विष्णु द्वारा राजा को जन्म देने की कहानी का भी महाभारत में उल्लेख किया गया है। पृथु को राजा के रूप में विष्णु ने जन्म दिया और स्वयं उसके अंग में प्रवेश किया। इस प्रकार के उल्लेख राज्य के दैवी सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं।

कौटिल्य को अर्थशास्त्र में भी राज्य की उत्पत्ति के दैवी सिद्धान्त का उल्लेख किया है। कौटिल्य के अनुसार "राजा से डरना चाहिए, राजा से बड़ा कोई देवता नहीं है, राजद्रोह दूर से भस्म कर डालती है।

दैवीय उत्पत्ति के सिद्धान्त की मुख्य बातें →

दैवीय सिद्धान्त के सम्बन्ध में विवेचन करने के बाद इसकी मुख्य बातों का उल्लेख निम्न प्रकार किया जा सकता है:—

(1) राजा और राज्य की उत्पत्ति का मूल कारण ईश्वर है।

(2) राजा ईश्वर का ही रूप है इसी कारण मौर्यकाल में राजा को देवानांप्रिय (Devanama Priya) कहा जाता।

(3) राजपद दैवीय है, राजा ईश्वर के संरक्षक के रूप में विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करता है।

(4) अराजकता को समाप्त करने के लिए राजा को ईश्वर ने उत्पन्न किया।

पाश्चात्य विचारकों ने भी राज्य उत्पत्ति में दैवीय सिद्धान्त को भी स्वीकार किया है। प्रो० A.S. Altekar के अनुसार "यूरोप में जो विशेषतः मध्य युग में ईसाई मत प्रभाव से शासन संस्था को दैवीय समझा जाता था। राजा परमेश्वर का साक्षात प्रतिनिधि है। अर्थात उसे राज्य करने का अधिकार ईश्वर प्रदत्त है। ठीक उसी प्रकार मत इस्लाम के अन्तर्गत भी पाया जाता है जिसमें बादशाह को खुदा का प्रतिनिधि

(5)

2. युद्ध द्वारा राज्य की उत्पत्ति का सिद्धान्त → Origin of the state Through war

हिन्दू राज्य शास्त्र के साहित्य में जहाँ राजा की दैवीय उत्पत्ति सम्बन्धित विचार है, वहीं दूसरी ओर राज्य की उत्पत्ति के मूल में युद्ध को भी माना गया है। इस प्रकार के सिद्धान्त का उल्लेख सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है। इसके अनुसार देव तथा दानवों में युद्ध हुआ। इस युद्ध में दानवों ने देवताओं को पराजित कर दिया। इस पर देवों ने कहा कि हमारा कोई राजा नहीं है। इसी कारण दानव विजयी होते हैं और हम पराजित होते हैं। अतः हमलोग भी राजा बना लें। इसे कौन सा (?) ने स्वीकार कर लिया।

Main points of The Theory → इस प्रकार युद्ध द्वारा राजा की उत्पत्ति का सिद्धान्त युद्ध को प्रमुख स्थान देता है। इस सिद्धान्त से मुख्य रूप से निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं →

(1) राज्य युद्ध की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उत्पन्न किया गया।

(2) राजतन्त्र की प्रणाली को देवों ने असुरों से ग्रहण किया। इस राजतन्त्र की उत्पत्ति निर्वाचन द्वारा हुई थी क्योंकि ऐतरेय में उल्लेख किया गया है कि देवताओं ने अपने लिए एक राजा निर्वाचन करने का निश्चय किया।

3. सामाजिक अनुबंध का सिद्धान्त Theory of Social Contact. → डा० काणे के अनुसार प्राचीन भारतीय साहित्य में कहीं-कहीं रूसो द्वारा उद्घोषित सामाजिक समझौते वाला सिद्धान्त की प्रतिध्वनि मिल जाती है। वर्तमानकाल में सामाजिक समझौते वाला सिद्धान्त दो स्वरूपों में उपस्थित किया गया है। पहला वह है जिसके द्वारा प्रशासन एवं जनता में स्पष्ट अभिमत की कल्पना की गई है और दूसरा वह है जिसके द्वारा यह व्यक्त होता है कि एक ऐसे राजनीतिक

समाज का निर्माण हुआ जो व्यक्तियों का पारस्परिक समझौता था, जिसमें राजा का कोई हाथ नहीं था।

इस सम्बन्ध में सर्वप्रथम उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है। इसके अनुसार "प्रजापति के नेतृत्व में देवताओं ने इन्द्र की ओर संकेत किया और कहा - यह देवताओं में शक्तिशाली है। सबसे महत्वपूर्ण एवं साहसी है। अतः इसे हमें अपना राजा स्वीकार करना चाहिए। दीर्घनिकाय के अनुसार "काफी समय पूर्व पृथ्वी में स्वर्ण युग था सभी मनुष्य आनन्दपूर्ण जीवन बिताते थे। कालान्तर में इस समाज का पतन हुआ, समाज में अव्यवस्था फैल गयी। लोगों ने अव्यवस्था को दूर करने के लिए व्याकुल हो उठे। अंत में लोगों ने महाजन-सम्मत नामक व्यक्ति से अपना राजा बनने तथा अव्यवस्था को दूर करने के लिए प्रार्थना की। इसके बदले लोगों ने उसे चावल का एक भाग देने का वचन दिया।"

इसी प्रकार जैन ग्रंथकार जिनसेन के अनुसार सृष्टि के आरंभ में पृथ्वी भोग भूमि थी कल्पतरुओं के प्रसाद से मनोकामनाएं सिद्ध होती थी किन्तु बाद में कल्पवृक्ष नष्ट हो गये। समाज में अराजकता फैल गयी। अतः अराजकता को दूर करने के लिए तीर्थंकर ऋषभनाथ ने राजा से नियुक्ति की और लोगों में कार्य का विभाजन किया।

महाभारत में भी शांतिपर्व के 68वें अध्याय में समाज में अराजकता को दूर करने के लिए उद्देश्य से एक सामाजिक अनुबन्ध तैयार किया गया तथा राजा की नियुक्ति की गयी तथा प्रशासन चलाना के लिए कर का निर्धारण किया गया। कौटिल्य के राज्य उत्पत्ति के सिद्धांत का योगमिलता है।

सिद्धांत की मुख्य बातें → उपर्युक्त विवरण के अनुसार सामाजिक अनुबन्ध सम्बन्धित स्रोतों को निम्नलिखित भागों

में विभक्त किया जा सकता है।

(1) **अराजकता की स्थिति:** → राज्य की उत्पत्ति के पूर्व समाज में अराजकता फैली थी। लोग एक दूसरे से लड़ रहे थे और एक दूसरे के विनाश में व्यस्त थे।

(2) **पारस्परिक समझौता:** → अराजकता की स्थिति से ऊबकर लोगों ने सर्वप्रथम अपने आपस में समझौता किया। इस समझौते के फलस्वरूप समाज में कुछ काल तक शांति स्थापित हो गई।

(3) **राजकीय अनुबंध:** → पारस्परिक समझौते के बाद लोगों ने राजकीय अनुबंध किया और अपनी स्वतन्त्रता प्रभुसत्ता के हाथों सौंप दी। इ[illegible] बदले में राजा को स्वर्ण, पशु का पंचम धान्य का दशम भाग, और प्रजा द्वारा अ[illegible] धर्म का चतुर्थ भाग प्रदान करने का अनु[illegible] किया। इस प्रकार राजा की उत्पत्ति मनुष्यों व पारस्परिक समझौते द्वारा हुई।

[illegible]) **राज्य की उत्पत्ति का आधुनिक सिद्धांत:** — राज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक आधुनिक विचारकों ने भी अपने सिद्धांत प्रस्तुत किये हैं। कुछ विचारकों का मत है कि प्राचीन काल में लोगों ने किसी व्यक्ति विशेष को अपने अधिकार स्वेच्छा से सौंप दिये थे (इस प्रकार का व्यक्ति या तो पुरोहित होता था जिसके बारे में विश्वास था कि वह पूजा के द्वारा ईश्वर को प्रसन्न कर सकता था। अथवा कोई मंत्र वेत्ता होता था जो अपनी मंत्र शक्ति द्वारा अलौकिक चमत्कार दिखाने का दावा करता था। अथवा कोई वैद्य होता था, जो अपनी औषधियों के द्वारा लोगों का रोग दूर कर सकता था। इस प्रकार एक बार अधिकार पाकर बाद में अपनी सत्ता को बनाये रखना उसके लिए कठिन नहीं था। इस प्रकार स्वेच्छा से लोगों द्वारा किसी व्यक्ति को अपना राजा बना देने से राज्य की उत्पत्ति हुई।

Scanned with CamScanner

प्रो० अल्तेकर के अनुसार आर्य जाति में इस प्रकार की धारणा अनुपयुक्त है। इनके अनुसार आर्य जातियों में सम्मिलित कुटुम्ब पद्धति से धीरे-धीरे राज्य का विकास होना युक्ति संगत है।

इस मत के समर्थन में पर्याप्त रूप से प्रमाण उपलब्ध है। भारत में आने के पूर्व आर्य सम्मिलित कुटुम्बों में रहते थे। होमर ने भी अपने समय के ऐसे परिवारों का उल्लेख किया है जिसमें सदस्यों की संख्या 300 होती थी। ऐसे परिवार में परिवार के मुखिया का शेष ~~सदस्यों~~ सदस्यों के ऊपर पूरा अधिकार होता था। उसे परिवार के किसी सदस्य को बेचने, उसे दंड देने तथा नष्ट करने का अधिकार था। वैदिक युगों के अनुसार इसी प्रकार के अधिकार पिता को प्राप्त थे। कुटुम्ब के मुखिया राजा के समान था। इसी प्रकार कुटुम्ब संस्था से ग्रामों का विकास हुआ और विभिन्न कुलों ने संघ का रूप धारण किया तो घर के मुखिया के अधिकार क्षेत्र में वृद्धि हो गयी।

इस प्रकार कुटुम्ब से ग्राम, ग्राम से विभू, विभू से जन का निर्माण हुआ। जन के जनपति को राजा कहा गया है। राज्य की उत्पत्ति का यह सिद्धान्त इस प्रकार संयुक्त परिवार को राज्य उत्पत्ति का मूल आधार मानता है। राज्य का वर्तमान रूप इसी के विकास का परिणाम है। संयुक्त परिवार के मुखिया को प्रारम्भ में प्रकृतिवश पूजा जाता था बाद में सामाजिक संस्थाओं के विकास से परिवार के मुखिया की सत्ता को स्वीकार करने के लिए अधिक अनुकूल वातावरण उत्पन्न किया। इस प्रकार के पैतृक धारणा के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के उल्लेख भी उपलब्ध हैं। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार "वह राजा सर्वोत्तम है जिसके राज्य में प्रजा निर्भय होकर विचरण करती है। जिस प्रकार

पुत्र पिता के घर में"। राजा के सम्बन्ध में इस प्रकार का पैतृक दृष्टिकोण, परिवार के मुखिया की ओर संकेत करता है। राजा को पितृ तुल्य मानने का अभिप्राय परिवार के मुखिया को और संकेत करना है। पिता की अच्छा अवधारणा को राज्य तक विस्तृत करता है। प्रो० अल्तेकर इस मत को प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं "संयुक्त परिवारों से ही धीरे-धीरे राजसत्ता का जन्म हुआ। यही पारिवारिक धन के सिद्धान्त के विकास को स्वीकार करता है तथा विवाह से सम्बोधित पारिवारिक तन्तुओं को भी स्वीकार करता है। इस प्रकार परिवार और पारिवारिक धन के विचार में राज्य के निर्माण में बहुत सहायता की।